جون ۲۰۰۷ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی

قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب



مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

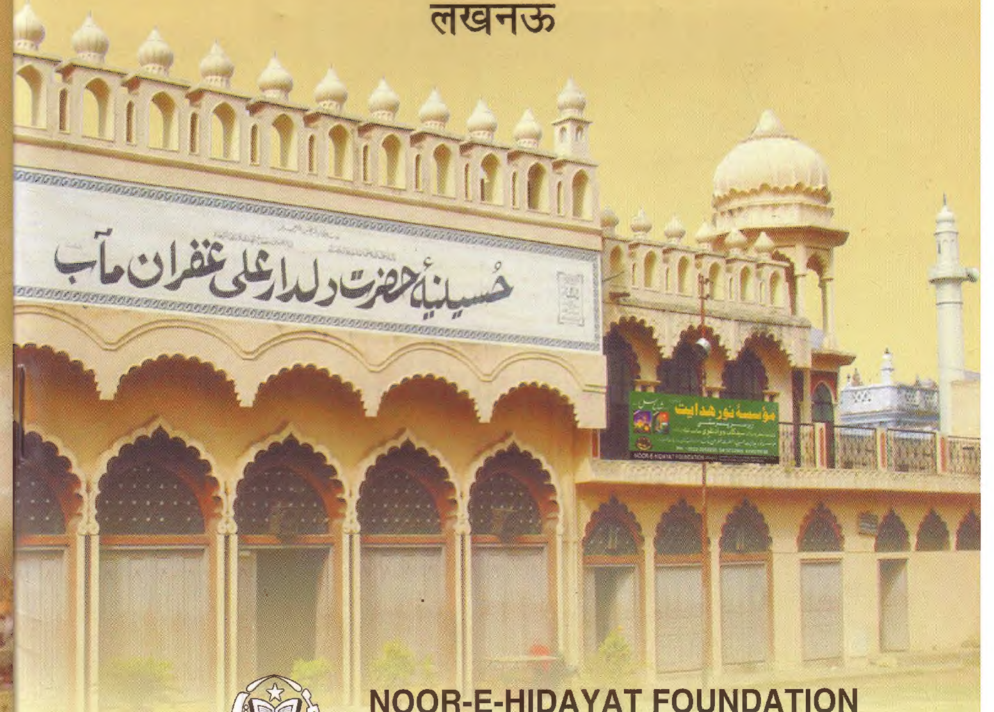
Lucknow

शुआ-ए-अमल

Jun 2007

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक–12

माह जून – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 40 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0	मज़मून लेखक	पेज न0
1–	तिजारत के इस्लामी उसूल	
	इमादुल उलमा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद	3
2–	एक सबक़ इस्लाम से	
	सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद नक़वी साहब ताबा सराह	7
3–	इमामे सज्जाद (स0) की समाजी शख़सियत	
	मौलाना सै0 एहसान हैदर रिज़वी साहब	9
4–	मासूम–ए–कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी	
	मोहतरमा निसार फ़ातिमा साहबा	11
5–	मुख्य समाचार	
	इदारा	15

अक़वाले इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0)

1– ख़ुदावन्दे आलम बेकार आदमी को पसन्द नहीं करता।

2– अपने ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद न रखो।

3– अपनी औलाद की इज़्ज़त करो और उनकी अच्छी परवरिश करो।

4– हसद करने वाला कभी इज़्ज़त नहीं पाता और जलने वाला अपने गुस्से से मरा करता है।

तिजारत के इस्लामी उसूल

इमादुल उलमा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

तिजारत को किसी क़ौम की मआशी फलाह व कामियाबी में जो बुनियादी हैसियत हासिल है वह हर समझदार इन्सान जानता है। इस्लाम ने इस सिलसिले में ख़ास तौर पर हिदायात की हैं और मुसलमानों की तरक़्क़ी व मज़बूती, आज़ादी और आत्मनिर्भरता और ख़ुशहाली के लिये तिजारती कारोबार पर सख़्ती के साथ ज़ोर दिया है। एक हदीस का तर्जुमा हैः ''तिजारती कारोबार को न छोड़ो वरना तुम ज़लील व बेइज़्ज़त हो जाओगे। तिजारत करो अल्लाह तुम्हें बरकत अता फरमाएगा।'' दूसरी हदीस का तर्जुमा यह हैः ''जो शख़्स तिजारत को छोड़ देता है उसकी दो तिहाई अक़्ल चली जाती है। तिजारत न छोड़ो कि इससे अक़्ल घट जाती है। अपने घर वालों की रोज़ी के लिये तुम ख़ुद कोशिश करो और ऐसा न होने दो कि तुम ख़ुद तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो और वह लोग तुम्हारे लिये मेहनत और कोशिश करें। कुछ हदीसों में तिजारती कारोबार को ख़ुदा के रास्ते में जेहाद के बराबर बताया गया है। और कुछ में इसे नमाज़ के बाद फ़ज़ीलत का दर्जा दिया गया है। ग़रज़ तिजारत एक ऐसी चीज़ है जिसे इस्लाम ने मुसलमानों की इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई ज़िन्दगी के लिए बहुत अहम हैसियत दी है। जिस वक़्त सरकारे दो आलम (स0) ने मक्का में इस्लाम की दावत देने की शुरुआत की थी उस वक़्त कुरैश की ज़िन्दगी का भी एक बड़ा सहारा तिजारती कारोबार ही था और वह बड़ी तादाद में गर्मी और जाड़े के मौसम में शाम और यमन के सफर किया करते थे। इस्लाम की दावत की शुरुआत और हिजरत के शुरु के दिनों में मुसलमान तरह–तरह की मुसीबतों में घिरे हुए थे इसलिए उन्हें इसका मौक़ा नहीं मिल सका कि वह तिजारती मैदान में आगे क़दम बढ़ा सकें। पूरा माहौल उनका दुश्मन था और ज़िन्दगी के तमाम रास्ते उनके लिये बन्द हो चुके थे लेकिन कुछ ज़माने के बाद जब सरवरे काएनात (स0) की अज़ीम सरदारी की बदौलत उन्हें ताक़त मिलने लगी और उनके जमने और कामियाबी की सूरतें उभरने लगीं तो उनको रसूले अरबी (स0) ने तिजारती कारोबार की तन्ज़ीम का और उसे आगे बढ़ाने का सख़्ती के साथ हुक्म दिया और इस हक़ीक़त से आगाह फरमाया कि तिजारती कारोबार में कामियाबी हासिल किये बिना उन्हें एक आत्मनिर्भर और शानदार ज़िन्दगी नहीं मिल सकती और यह कि जो क़ौमें तिजारत की दुनिया में कोई इज़्ज़त की जगह नहीं रखतीं वह हमेशा ज़लील और दूसरों की गुलाम रहा करती हैं लेकिन साथ ही इस्लाम ने तिजारती कारोबार के लिये ऐसे उसूल और क़ानून बना दिये हैं जिनके हिसाब से काम करने से कभी वह इन्फेरादी और इज्तेमाई ख़राबियाँ नहीं पैदा हो सकतीं जो इन क़ानूनों से बे परवाह और आज़ाद रह कर पैदा हो सकती हैं।

इन बुनियादी क़ानूनों और उसूलों के सिलसिले में कुछ आयतों और हदीसों को सामने रखना बिलकुल काफी होगा। सूर–ए–निसा आयत–29 में अल्लाह का इरशाद हैः ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ तरीक़े पर न खाओ हाँ अलबत्ता अगर आपसी रज़ामन्दी से कोई तिजारती मामला हो तो कोई बुराई नहीं है।

दूसरी एक और आयत (275) सूर–ए–बक़रा की है जिसके एक हिस्से में फरमाया गया हैः अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम कर दिया है।

इन आयतों से तिजारत का यह इस्लामी ख़याल साफ हो गया कि इसमें कोई एक दूसरे को किसी तरह का भी धोखा न दे और उससे नाजाएज़ फायदा उठाने की कोशिश न करे और जो कारोबार भी हो पूरी दयानतदारी और आपसी रज़ामन्दी से हो इस तरह फरेब देने, मिलावट, ऐब छुपाने और इसी तरह की दूसरी बातों से तिजारती कारोबार हमेशा के लिये महफ़ूज़ रह सकता है, एक शख़्स दूसरे पर जो भरोसा रखता है इसमें कोई फ़र्क न होगा, तिजारत की साख क़ायम रहेगी और बेएतेबारी या शक व शुबह से जो नुक़सान तिजारती मुआमलात को पहुँच सकता है वह नहीं पहुँचेगा। क्योंकि तिजारती पेशे में दयानतदारी की साख क़ायम हो जाना उसकी कामियाबी के लिए बहुत बड़ी ज़मानत है।

हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) ने अपनी एक हदीस में फरमाया था जिसका तर्जुमा यह है कि: ''अपनी ज़बान बातचीत में सच्ची रखो और माल में जो कमी हो उसे कभी न छुपाओ। जो शख़्स तुम पर भरोसा रखता है इसे नुक़सान पहुँचाने की कोशिश न करो यानी हर एक के साथ पूरी सच्चाई के साथ मुआमला करो और दूसरे लोगों के लिये भी वही अच्छी और जायज़ बात पसन्द करो जो तुम खुद अपने लिये पसन्द करते हो। हक़ दो और हक़ लो। न डरो न ख़यानत करो, बेशक सच्चा और दयानतदार ताजिर क़यामत में फरिश्तों के साथ होगा। क़समें खाने से परहेज़ किया करो क्योंकि झूठी क़समें, क़सम खाने वाले को जहन्नम का मुस्तहक बना देती हैं। यक़ीनन वही ताजिर तारीफ के क़ाबिल है जो हक़ दे और हक़ ले।''

कुर्आने हकीम ने बहुत सी जगहों पर नाप–तौल में कमी करने वालों की सख़्त बुराई की है और उस पर तबाही और अज़ाब का एलान किया है और यूँ भी यह काम हराम मामलात के उसूल में शामिल है जिसको अल्लाह ने मना किया है और उस आपसी रज़ामन्दी के इस्लामी उसूल के भी ख़िलाफ है जो बेचने वाले और गाहक के बीच ज़रूरी है। ग़रज़ इस्लाम ने जहाँ तिजारत को मुसलमानों की ज़िन्दगी और इन्फेरादी व इज्तेमाई फलाह व कामियाबी, वक़ार व इज़्ज़त और तरक़्क़ी व मज़बूती को अहमतरीन ज़रिया बताया है साथ ही कुर्आन व हदीस के ज़रियेसे इसकी कुछ हदों से भी आगाह कर दिया है। इनमें सबसे ज़्यादा नुमायाँ वह हदें और वह पाबन्दियाँ हैं जो तकलीफ पहुँचाने और इस्तेहसाल से रोकने के लिये हैं जैसे धोका, ग़लत बयानी, महंगाई, अपने माल की हद से बढ़कर तारीफ करना जिसमें हद से ज़्यादा इश्तेहार क़तई तौर पर दाख़िल है। ख़राब माल को अच्छा बताकर पेश करना, क़ीमत के तै करने के बारे में झूठ से काम लेना। ख़रीदार को तरह–तरह से इसका शौक़ दिलाना और ऐसी तरकीबें करना कि वह माल की ज़्यादा क़ीमत देने पर आमादा हो जाए। माल को महंगा बेचने के लिये जमा करना जिसे शरीई ज़बान में ''एहतेकार'' कहते हैं या किसी और तरीक़े से चीज़ों की क़ीमतों में बनावटी महंगाई पैदा करने की कोशिश करना। इस्लाम ने इसकी तालीम दी है कि बेचने वाले के लिये यह बात ज़रूरी है कि अगर उसके माल में कोई बुराई है तो उस से ख़रीदार को पूरी तरह बाख़बर करे इसी तरह ख़रीदार की मजबूरी से फायदा उठाकर उससे ज़्यादा दाम वुसूल कर लेना भी उन तमाम ग़लत तरीक़ों में शामिल है जिनको किताब व सुन्नत में साफ तौर पर बयान किया गया है और इस तरह का तिजारती मुआमला क़तई तौर पर नाजायज़ और फासिद होगा।

मजबूरी की हालत से मुराद यह है कि ज़रूरत से मजबूर होकर कोई अपना माल बेच रहा हो या कोई ज़रूरतमन्द शख़्स किसी माल को ख़रीद रहा हो। इस तरह "मुज़तर" जिसे हम दूसरी लफ्ज़ों में सख़्त ज़रूरतमन्द कहते हैं। बेचने

वाला और ख़रीदने वाला दोनों ही हो सकते हैं। आम तौर पर लोग ऐसे मौक़ों से नाजायज़ फायदा उठा लेते हैं। शरीअते इस्लाम ने लोगों को इस इन्सानी जुर्म से सख़्ती के साथ रोका है। एक हदीस में फरमाया गया है कि ऐसे लोग बदतरीन इन्सान हैं जो किसी की परेशान हाली से इस तरह का फायदा हासिल करें। ख़ुलासा यह हुआ कि इस्लाम ने इस तरह की तिजारती कारोबार की इजाज़त दी है जिसमें पूरी दयानतदारी से काम लिया जाए। जिसमें आपस की भरपूर रिज़ामन्दी हासिल हो। धोका और फरेब किसी शक्ल और किसी तरीक़े पर भी न हो, बदनियती, इस्तेहसाल और तकलीफ पहुँचाने का कोई रुख़ मौजूद न हो, किसी शख़्स की परेशानी और मजबूरी की हालत और घबराहट या मुसीबत से फायदा हासिल करने की कोशिश न हो। वादा ख़िलाफी, ग़लत बात कहना और बुरा मुआमला करने से क़तई तौर पर काम न लिया जाए। लिखा पढ़ी और तमाम मुआमलात सही तौर पर किये जाएँ। अपने माल की बढ़ाचढ़ाकर तारीफ़ करके या किसी दूसरे तरीक़े से ख़रीदार को फाँसने की कोशिश न की जाए, तिजारत के माल की सही और असली हालत से ख़रीदार को आगाह किया जाए और साथ ही उन चीज़ों और उन तरीक़ों से तिजारत की जाए, जिनसे तिजारत करना इस्लाम ने जाएज़ क़रार दिया है और उन्हें ग़लत और हराम नहीं किया है। फिर तिजारत का मक़सद अपनी अकेले की ख़ुशहाली के साथ–साथ सबकी कामियाबी और ख़ुशहाली भी हो यानी तिजारत की ग़रज़ यह न हो कि कुछ लोग दौलत व मालदारी के तमाम रास्तों और नतीजों पर क़ब्ज़ा करके बैठ जाएँ और दूसरे लोग उनके भिखारी बन जाएँ बल्कि मेहनत करने वालों को उनका पूरा–पूरा हक़ मिले और माल पूरे समाज में फिरता रहे ताकि माल लगाने वाले और मेहनत करने वाले सबके सब मिल कर पूरी क़ौम को ख़ुशहाल बना सकें।

जिस तिजारत में हक़ पाने और पहचानने का वजूद न हो और जिसकी बुनियाद ज़ुल्म, नुक़सान, नफ्स परवरी, ऐश परस्ती, ख़ुदग़रज़ी, मफ़ादपरस्ती और मौक़ा परस्ती और दूसरों के इस्तेहसाल पर हो वह तिजारत बिलकुल ग़ैर इस्लामी है और बेशक वह इन्सानी नस्ल के लिये तबाही और बर्बादी का एक ख़ौफनाक पैग़ाम साबित होगी।

माल व दौलत अल्लाह की अमानत है

अल्लाह ने जगह–जगह क़ुर्आन हकीम में फरमाया है कि जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है वह सब का सब उसी की मिलकियत है। सूर–ए–'हदीद' में अल्लाह का इरशाद हैः ''आसमानों और ज़मीन में उसी की सलतनत है'' सूरा–ए–'शूरा' में फरमाता हैः ''उसी अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है''। फिर सूरा–ए–'ज़ुख़रुफ' में फरमाया गया है ''वह ज़ात बड़ी आलीशान है जिसके लिये आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है सबकी हुकूमत है'' फिर सूरा–ए–'नज्म' में फरमाता हैः और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है।'' यहाँ अल्लाह ने जो कुछ फरमाया है उससे साफ ज़ाहिर होता है कि हम माल व दौलत के असली मालिक नहीं हैं बल्कि इसके अमानतदार हैं। और हमें अल्लाह की मर्ज़ी और हुक्म के ख़िलाफ एक पैसा भी न ख़र्च करना चाहिए और इसी तरह सारे ख़र्चे पर कड़ी नज़र रखना चाहिए जिस तरह एक बहुत ही दयानतदार और अमानतदार शख़्स किसी की अमानत को बेजा और ग़लत तरीक़े से ख़र्च करने से बचता है। चुनानचे इसी सूरा–ए–'नज्म' में फिर फरमाया गया हैः ''यह जो कुछ माल व दौलत अल्लाह ने

इन्सानों को दिया है उसकी ग़रज़ यह है कि वह उन लोगों को सज़ा दे जो इसका ग़लत इस्तेमाल करते हैं और उन लोगों को सवाब दे जो इसका सही इस्तेमाल करते हैं।

सूरा 'हदीद' में एक जगह अल्लाह का इरशाद है जिसका तर्जुमा यह हैः ''अल्लाह और उसके रसूल (स0) पर सच्चे दिल से ईमान लाओ और अपने माल व दौलत में से जिसमें तुमको उसने अपना नाएब बनाया है उसके रास्ते में ख़र्च करो।'' इन तमाम बातों से यह नतीजा निकला है कि हम जिस माल व दौलत को अपना कहते हैं वह हक़ीक़त में हमारा नहीं है बल्कि अल्लाह का है और हम सिर्फ एक अमीन और नाएब की हैसियत रखते हैं इसलिए हमें अल्लाह की इस अमानत को उसी तरह ख़र्च करना चाहिए जिस तरह उसकी मर्ज़ी हो वरना यह ख़यानत होगी और हमें इसकी सज़ा मिलेगी। इस बात को हम इस तरह भी देख सकते हैं कि ज़मीन व आसमान की जितनी चीज़ें हैं वह सब अल्लाह की पैदा की हुई हैं और उन्हीं से हम अपने लिये हर तरह के फायदे हासिल करते हैं और उन्हीं को हम अपना माल व दौलत समझते हैं तो जब हम यह देखेंगे कि जो चीज़ें हमारे क़ब्ज़े में हैं चाहे वह ज़मीन हो, पानी हो, आग हो या कोई और चीज़ हो इनमें से कोई चीज़ भी हमने नहीं बनाई बल्कि वह सब अल्लाह ही की बनायी हुई हैं तो हम पूरी तरह समझ जाएँगे कि न तो हमारे जिस्म के हिस्से हमारे हैं, और न हमारा जिस्म हमारा है और न वह चीज़ें हमारी हैं जो हमारे क़ब्ज़े और इस्तेमाल में हैं बल्कि हम और हमारी हर चीज़ अल्लाह ही की बनाई हुई है तो ऐसी सूरत में लाज़मी तौर पर हम अपने हर अमल में हर काम में और हर इस्तेमाल और हर ख़र्च में एक ख़ज़ान्ची, नौकर और अमानतदार की तरह अल्लाह की बारगाह में जवाब देने वाले होंगे। आपने बार–बार देखा होगा कि जब कोई शख़्स अपने नौकर को कुछ रक़म देता है ताकि वह बाज़ार से कुछ सौदा वग़ैरा ले आए और जब वह नौकर उसकी मंगाई हुई चीज़ें लाता है तो वह किस तरह उस से एक–एक चीज़ का हिसाब माँगता है फिर वह यह भी देखता है कि इस नौकर ने सौदा लाने में वक़्त कितना लगाया। ग़रज़ किसी अमानत को ख़र्च करने में इन्सान पर बड़ी ज़िम्मेदारी होती है बस इसी तरह हर शख़्स को अपनी ज़िम्मेदारी अल्लाह की बारगाह के सामने भी समझना चाहिए बल्कि इस ज़िम्मेदारी की अहमियत तो सबसे ज़्यादा है। एक नौकर और मुलाज़िम के पास जो अमानत है वह उसके बनाए हुए मालिक की होती है और ख़ुद हर इन्सान के पास जो कुछ भी है वह उसके हक़ीक़ी मालिक और आक़ा अल्लाह की मिलकियत है और फिर ऐसा मालिक जो इन्सान के हर छुपे हुए और हर ज़ाहिर काम की पूरी ख़बर रखता है और कोई राज़ भी उसकी ज़ात से छुपा नहीं रखा जा सकता जबकि बनाए गये मालिक की नज़र से बहुत सी बातें उसके नौकर की छुपी रहती हैं और वह इन बातों को नहीं जानता। ख़ुलासा यह हुआ कि हम माल व दौलत के अमानतदार हैं और हमारा फ़र्ज़ है कि हम इस बात को बड़ी गहरी निगाह से देखते रहें कि हमारे पास जो माल आया है वह हराम रास्तों से न हों। और जिन बातों में हम इस माल को ख़र्च करें वह भी अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ न हों अगर हम अपने माल को ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ ख़र्च करेंगे तो अस्ल में हम अल्लाह के माल में ख़यानत करेंगे और ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा फरमाता हैः यानी ''अल्लाह किसी ख़यानत करने वाले, शुक्र अदा न करने वाले को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता।''

ग़रज़ कि सच्चा मुसलमान वही है जो अपनी दौलत ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ न इकटठा करे और न ख़र्च करे।



एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

इन परिस्थितियों में धर्म की शिक्षाओं और उसकी ओर आवाहन की अधिक आवश्यकता है। यह धर्म और मात्र धर्म है जो विनाश और भंवर की ओर तेज़ी से बढ़ती हुई मानवता की नौका को बचा के मुक्ति के घाट तक पहुँचा सकता है। मात्र ईश्वरीय भय है, जो उसको तबाही फैलाने वाले (घातक) हथियारों के बेजा इस्तेमाल से रोक सकता है। अगर मज़हब रुकावट नहीं बनेगा तो पता नहीं कितने और शहर 'नागा साकी' और 'हीरोशिमा' की तरह एटम और हाइड्रोजन बमों का शिकार होते रहेंगे। और न जाने कितने 'वियतनाम' साम्राजी शासकों का निशाना बनेंगे। लेबनान, इस्राइली हथियारों और अफ़गानिस्तान, रूस की विनाशकारियों का शिकार होता रहेगा। और हो सकता है कि कभी कोई बिफरा हुआ सरफिरा डिक्टेटर किसी बहादुर राष्ट्र को तोपों, टैंकों और राकिटों के सामने अपना सर न झुकाते देखकर या साधारण हथियारों में अपने को कमज़ोर पाके पराजय के ख़तरे से बचने के लिये एटमी लड़ाई शुरु कर दे और धरती भाप बन के वातावरण में बिखर जाये।

यानी यह तो सम्भव है कि इंसान भौतिक उपायों से अन्तरिक्ष पर विजय पा ले। सुदूरतम नक्षत्रों से सम्पर्क साध ले। लेकिन ईश्वर से नाता जोड़े बिना अपने मन (नफ़्स) पर विजय पाना, भावनाओं को क़ाबू में लाना, त्याग बलिदान और मानवीय सहानुभूति के भाव पैदा करना सम्भव नहीं। मानव प्रगति द्वारा अतिघातक पशु बन सकता है परन्तु अशरफ़ुल मख़लूक़ात (श्रेष्ठतम सृष्टि) नहीं बन सकता।

एक पहलू से और भी विचार किया जा सकता है और वह यह है कि इंसान के प्रत्येक कार्य का प्रेरक उसका अपने निज का लाभ होता है। वह हर काम में क़दम उठाते समय यही सोचता है कि मुझे क्या हासिल होगा! वह कभी वीरता इस लिये दिखाता है कि अपनी बहादुरी का सिक्का जमाये। कभी धन ग़रीबों में इसलिये बाँटता है कि दानवीर कहलाये। कभी पीड़ितों का सहायक इसलिए बनता है कि लोग उसे जनता का हमदर्द समझें। ऐसे अवसरों पर जब देखने में कोई स्वार्थ सिद्ध होता नहीं दिखाई पड़ता लेकिन गहराई से देखने में थाह लग जाती है कि किस–किस ढंग से उद्देश्य अपनी ही भलाई या स्वार्थ है।

ऐसे अवसर भी आ सकते हैं कि उसके दम से उसके घर वालों परिवार वालों का, कोई फ़ायदा न हो बल्कि सरसरी निगाह से घाटा ही घाटा दिखाई देता हो। कोई प्रशंसक न हो, कोई उत्साह बढ़ाने वाला न हो। ऐसे समय में अच्छाई की प्रेरक और नेकी की तरफ दे जाने वाली यह

कल्पना हो सकती है कि कोई मनुष्य भले ही न देख रहा हो परन्तु वह तो देख रहा है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सबका जानने वाला है। कोई बदला दे न दे वह तो मौजूद है जो पुकार–पुकार कर कह रहा है, ''जो कुछ अपने लिये पहले से भेज दोगे वह अल्लाह के पास सुरक्षित मिलेगा।''

धर्म की आवश्यकता पर पहले भी प्रकाश डाला जा चुका है। धर्म को ज़िन्दगी से हटा देने का नतीजा मन की ग्रंथियों, तान्त्रिकों के रोगों और अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाओं के रूप में धर्म की आवश्यकता और पैग़म्बरों की शिक्षाओं पर चलने को आवश्यक और प्रकृति की माँग ठहराता है।

''वह्य'' अथवा रहस्यात्मक संकेत

अल्लाह द्वारा नियुक्त पैग़म्बरो की ज़रूरत इसीलिये तो है कि वह फ़ितरत के मुताबिक़, प्रकृति के अनुसार ऐसी विधियाँ सिखायें जो प्रकृति के विधाता ईश्वर ने मनुष्य की भौतिक, आध्यात्मिक और द्रन्द्रियों सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रख के उसके लिये बनाई हैं। इन विधियों का ज्ञान सामान्य जन को तो पैग़म्बर के माध्यम से होगा लेकिन पैग़म्बर को क्योंकर ज्ञान होगा। इस विशेष सम्पर्क सूत्र को, जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के बीच होता है जो दूसरें लोगों को उपलब्ध नहीं, जिसके द्वारा ईश्वर का संदेश पैग़म्बर प्राप्त करता है और फिर दूसरों तक पहुँचाता है ''वह्य'' कहते हैं।

पैग़म्बरी के इन्हीं दोनो पक्षों यानी ईश्वर से पाने और उसके बन्दों तक पहुँचाने की क्षमता की ओर कुर्आन की आयत में इशारा है, ''मैं तुम्हारे ऐसा इन्सान हूँ (अतएव तुम से सम्पर्क है कि सन्देश पहुँचा सकूँ) और मुझ पर अल्लाह की वही आती है (यही वह सन्देश है जो तुमको देना है)।

''वह्य'' के माने अरबी में हैं गुप्त रूप से बात करना, इशारों और संकेतों से किसी तथ्य को प्रकट करना जैसे सम्बन्धित व्यक्ति के अलावा कोई दूसरा न समझ सके। कुर्आन मजीद में ''वह्य'' शब्द का प्रयोग विभिन्न अवसरों पर हुआ है। शैतान द्वारा भ्रमित किये जाने के लिये भी यह शब्द प्रयोग किया गया है ''शैतान अपने दोस्तों के दिलों में (बुराईयों के) भाव उभारते हैं।

ईश्वर की तरफ से कोई भी बात ह्रदय में आ जाने के लिये भी यही शब्द आया है। जैसे ''हमने (जनाब) मूसा की माँ के दिल में यह बात डाली कि मूसा को दूध पिलाती रहें। और जब उनके बारे में भय हो तो नदी की लहरों को सौंप दें।'' प्रकृति के संकेत के लिये भी इसका इस्तेमाल किया गया है जैसे मधुमक्खी के लिये कहा गया है कि, मधुमक्खियों की ओर अल्लाह ने ''वह्य'' की। यअ्नी उनके स्वभाव में यह बात ठहरा दी कि वह अपने छत्ते पहाड़ों, पेड़ों और मानव निर्मित ऊँची इमारतों में बनायें। इन सभी अवसरों पर वह्य शब्द का इस्तेमाल पोशीदा इशारे (गुप्त संकेत) अर्थात् शाब्दिक अर्थ में हुआ है। चाहे यह संकेत शैतान की ओर से हुआ हो चाहे अल्लाह या प्राकृति की ओर से हुआ हो, मगर वह्य का परिभाषित अर्थ उस सम्पर्क सूत्र का है, जिसके द्वारा ईश्वर अपनी मर्ज़ी पैग़म्बरों के लिये व्यक्त करता है, इस ढंग से कि उसको ईश्वरीय सन्देश समझने में इन पैग़म्बरों को ज़रा सा भी शक न हो और किसी भी गलती की गुंजाइश न रहे।

(जारी)

इमामे सज्जाद (अ०) की समाजी शख़्सियत

मौलाना सै0 एहसान हैदर रिज़वी साहब

हालात व इक़्दामात

तारीख़े इस्लाम की क़यादत में इमाम सज्जाद अलैहिस्सलाम के किरदार के ज़िक्र से पहले ज़रूरी है कि यह बात फिर से दुहरा दी जाए कि अइम्म–ए–अहलेबैत (अ0) में से हर इमाम अपने ज़माने की इस्लामी उम्मत की इन्फेरादी, समाजी, फिक्री और सियासी क़यादत के लिये इन ख़ुतूत को तय करता है जिन पर इस्लामी उम्मत की इस्लाह व कामियाबी पूरी तरह मुमकिन हो, क्योंकि इमाम के लिये मुमकिन नहीं है कि वह उम्मतसे बे ताल्लुक़ और उनके समाजी हालात से नज़र चुराए, बल्कि वह हमेशा अपने ज़माने के हालात पर नज़र रखते हुए उम्मत के लिये सियासी और ग़ैर सियासी तरीक़े को चुनता है। और यही वजह है कि हम इमामों के इक़दामात में इख़्तेलाफ पाते हैं और उनकी इस्लाही हिक्मत में फर्क़ नज़र आता है कि हर इमाम अपना ख़ास रास्ता, नज़रिया और तरीक़ा इस्तेमाल करता है बल्कि एक ही इमाम अपनी ज़िन्दगी के कई हिस्सों में इस्लामी उम्मत के बदलते हुए समाजी और सियासी हालात को देखते हुए कई तरीक़े और रास्ते चुनता है। जैसा कि हमें अली बिन अबी तालिब (अ0) और आपके बेटे हसन (अ0) व हुसैन (अ0) और उनके बाद इमाम अली बिन हुसैन (अ0) की ज़िन्दगियों में नज़र आता है जिनको अब हम बयान करेंगे।

इमाम अली बिन अबी तालिब (अ0) अपनी इस्लाही क़यादत के ज़माने में तीन दौरों से गुज़रे। आपका पहला दौर रसूल (स0) की ज़िन्दगी में गुज़रा जब आप एक ऊँचे दर्जे के मानने वाले और फरमाबरदार सिपाही की हैसियत से कभी मैदाने जंग में जाते और कभी पैग़ाम पहुँचाने के दूसरे फ़र्ज़ अन्जाम दे रहे थे।

आपका दूसरा दौर उन तीन ख़लीफाओं के ज़माने में जो तारीख़ी एतेबार से उम्मत के ख़ुद से सरदार बन गये थे। उस ज़माने में आप (अ0) की सारी कोशिश हक़ीक़ी इस्लाम की हिफाज़त, इस्लामी सियासत को फैलाने और उम्मत के इज्तेमाई रास्तों को बनाने में ख़र्च हो रही थी। इसलिए इसी ज़माने में आपने क़ुर्आन करीम इकटठा किया, हुक्काम को रास्ता दिखाया, हद से आगे जाने वालों को समझाया और फिर जाने वालों को नसीहत और हक़ व हक़ीक़त की हिदायत फरमाई।

लेकिन जैसे ही इस्लामी उम्मत की क़यादत आपके हाथों में आई अब आपकी सारी पालीसियाँ बिलकुल बदल गईं और आपने उम्मत की क़यादत का नया रास्ता ईजाद किया और वह सारी बुरी और ख़राब बातें जो हुकमरानों ने इस्लाम में पैदा कर दी थीं उन सबको आपने बिलकुल बातिल कर दिया। और इस्लाम की हक़ीक़ी ज़रूरतों के हिसाब से और इस्लामी उम्मत के हक़ीक़ी सुधार को देखते हुए अपने सारे हुकूमती और कारोबारी प्रोग्राम नई तरह से तरतीब दिये।

इमाम अली (अ0) की तरह बड़े नवासे इमाम हसन (अ0) ने भी अपने अब्बा जान के ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस वक़्त जब आपने बनी उमैय्या के गिरोह को मज़बूत पाया और उनके इक़दामों में हद से आगे बढ़ जाने का जायज़ा लिया तो आपने भी शुरु में अपनी पालीसी बदल दी लेकिन बाद के मौक़ों में हालात के एतेबार से आपने अपना पहला तरीक़ा भी बदला (वसीक़तुलहुदना के बाद....)

यहीं से हम देखते हैं कि हर इमाम अवाम और आम हालात को सुधारने के लिये अपना किरदार अदा करता है। और इसी से इस बात का अन्दाज़ा होता है कि इमाम सज्जाद (अ0) ने इस्लामी उम्मत की रफ्तार को सिर्फ इसलिए नहीं मोड़ा था कि उन्हें उम्मत की क़यादत के लिए जो कुछ भी कर गुज़रना पड़ता वह उन्होंने किया। बल्कि आप ने मौजूदा हालात में मुस्लिम उम्मत के लिये सही और सबसे अच्छा इस्लामी व इस्लाही रास्ता चुना जिसकी बुनियाद इस्लामी अहकाम पर पड़ी थीं।

यहाँ इस बात को भी बढ़ा दिया जाए कि जिन लोगों ने अइम्मा अलैहिमुस्सलाम की इन बड़ी फिक्री ख़ूबियों की बिना पर तय किये हुए रास्तों से हालात व वाक़ेआत की वजह से इस्लाह क़बूल न की बल्कि उनसे अलग रहे उनमें ज़्यादातर ने खुली हुई ग़लती की (और इमाम की इस बड़ी फिक्र को न समझ सके) यहाँ तक वह इमाम हसन (अ0) से भी इमाम हुसैन (अ0) की तरह जंग का सवाल करते हैं, और इमाम हुसैन (अ0) से इसके उलट सुलह का सवाल करते हैं।

अइम्म–ए–मासूमीन (अ0) की सीरत में बेशुमार ऐसी दलीलें मौजूद हैं जो इन बातों को साफ करती हैं कि इस्लमी उम्मत की इस्लाही क़यादत में, उनके काम के तरीक़ों में इख़्तेलाफ की क्या वजहें थीं, (और किन हालात ने उनके इक़दामात में फर्क़ पैदा किया) इमाम हसन (अ0) ने भी बार–बार इस बात को साफ किया है कि इन हालात में मुआविया से सुल्ह करना ही सही इस्लामी रास्ता और तरीक़ा था और इसके अलावा कोई भी दूसरा तरीक़ा समझ में आने वाला नहीं था। जैसा कि आपने फरमाया ''ऐ अबु सईद! मुआविया से मेरी सुलह की बिलकुल वही वजह है जो रसूल (स0) का बनी ज़ुमरा और बनी अश्जअ् से सुलह की वजह थी और बिलकुल वही वजह थी जो रसूल (स0) का मक्के वालों से हुदैबिया से पलटने के मौक़े पर सुल्ह की वजह थी'' और जैसा कि आपने बशीर हमदानी से फरमायाः ''मेरा मक़सद इस सुलह से सिर्फ यह था कि तुम लोगों को क़त्ल होने से बचाऊँ''।

और इमाम हुसैन ने अपने फ़ातेहाना क़याम की पहचान भी अपने ज़ाती इक़दाम से नहीं की थी बल्कि फरमायाः ''मुझे खुदा क़त्ल किया हुआ देखना चाहता है'' यानी आप साफ कर रहे थे कि मैंने इन्हेराफों के मुक़ाबले में यह क़याम जिसमें मेरी शहादत हुई है अपने ज़ाती इक़दाम और अपनी शख़्सी फ़िक्र की बुनियाद पर नहीं की बल्कि यह सिर्फ खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ था जिसे मैंने अन्जाम दिया है।

और इमाम सज्जाद अली बिन हुसैन (अ0) से जब इबाद अलबसरी ने मक्का के रास्ते में कहाः आपने जिहाद और उसकी सख़्तियों को छोड़ दिया और हज और उसकी आसानियों के लिये जा रहे हैं जबकि ''अल्लाह मोमिनों से उनकी जानों और मालों को ख़रीद लेता है''। तो

(शेष..........पृष्ठ 14 पर)

मासूम-ए-कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी

मोहतरमा निसार फ़ातिमा साहिबा

ऐसे दौर में जब कि एतेक़ादी बातें तिरछी निगाहों से देखी जाती हैं और उसके इस नुक्ते पर गहरी निगाह नहीं डाली जाती कि इस अक़ीदे के पीछे क्या कामियाबी छुपी हुई है। जनाब मासूमा (स0) की पैदाईश और शादी के बारे में तफसीली वाक़ेआत बयान करना तो शायद खुश एतेक़ादी और मज़हब परस्ती पर लाद दिया जायेगा।

इसलिए मैं अपनी बहनों के सामने मासूम–ए–कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी के कुछ वाक़ेआत पेश करना चाहती हूँ लेकिन इससे पहले यह ज़हन में रखना ज़रूरी है कि जनाब मासूमा सलामुल्लाहि अलैहा की उम्रे मुबारक सिर्फ पाँच साल की थी कि आपकी माँ जनाब ख़दीजतुल कुबरा का इन्तेक़ाल हो गया और आपकी सारी की सारी परवरिश सरदारे दो जहाँ के साये में हुई। अब चाहे आँहज़रत (स0) ने ज़िन्दगी के हर हिस्से की तालीम व तरबियत अमल से की हो या बताकर और नसीहत देकर। लेकिन यह मानना पड़ेगा कि औरत की तालीम व तरबियत का मसअला एक मर्द के हाथ से अन्जाम पाकर दुनिया की औरतों के लिये हर पहलू से (दीनी हो या दुनियावी) नमून–ए–अमल बन जाना अगर इसे करिश्मा नहीं कहा जा सकता तो ताज्जुब वाला इस माने में ज़रूर है कि आज तक कोई मिसाल दुनिया में ऐसी नहीं मिलती कि सिर्फ बाप की तालीम व तरबियत से बेटी ऐसी अच्छी ख़ूबियों और अच्छे कामों वाली हो गई हो।

मेरी इज़्ज़तदार बहनों! अपनी जगह पर जब आप ग़ौर करेंगी तो मालूम होगा कि औरत के लिये शौहर के घर जाकर सबसे बड़ा फ़र्ज़ जो उसके ज़िम्मे होता है वह शौहर की इताअत और शौहर का हुक्म मानना है। इसमें मासूम–ए–कौनैन अपनी मिसाल आप ही हो गईं। अल्लाह! अल्लाह!! किस औरत का हौसला ऐसा है कि वह पूरी ज़िन्दगी अपने शौहर से किसी तरह की फरमाइश इस ख़याल से न करे कि शायद मेरा शौहद मजबूर हो तो उसे शर्मिन्दा होना पड़े। मुझे तो मासूमा (स0) की ज़िन्दगी में कोई मौक़ा इसके अलावा नज़र नही आता कि एक बार बीमारी के मौक़े पर शौहर के बार–बार कहने पर अनार की ख़्वाहिश कर दी थी ताकि दुनिया आगे चलकर इन वाक़ेआत से कहीं यह नतीजा न निकाल बैठे कि ख़ुदा की पनाह रसूल (स0) की बेटी के मिज़ाज में घमण्ड था वरना अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम जैसे शौहर के बार–बार कहने पर फरमाइश न करना क्या मतलब?

इसके अलावा मुहब्बत व ख़िदमत व वफादारी का ताल्लुक़ जहाँ तक था उसकी कैफियत को कोई बाबुल इल्म से पूछे तो मालूम हो कि वफात के बाद आपको वह सुकून व इत्मिनान नसीब न हुआ जो जनाबे सैय्यदा (स0)

की ज़िन्दगी में हासिल था। ख़ुद जनाबे अमीर (अ0) के वह अलफाज़ जो वफात के बाद मुबारक ज़हन से निकले आज तक दलील हैं। अब इससे ज़्यादा और क्या सुबूत होगा।

दूसरा अहम फ़र्ज़ औलाद की तालीम व तरबियत का औरत के ज़िम्मे होता है जिसे औलाद से इतनी मुहब्बत व उलफत होने के बावजूद कि अगर मस्जिदे नबवी से आने में ज़रा सी देर हुई या कोई बच्चा रसूल (स0) की मस्जिद से रोता हुआ आया तो आपने चादरे इस्मत व तहारत ओढ़ ली, मोज़े पहन लिये जिसके बारे में कई वाक़ेआत तारीख़ और सीरत की किताबों में लिखे हैं और जानकार लोग इनको ख़ूब जानते हैं फिर भी तालीम व तरबियत का उनवान कितना अच्छा और आसान था कि जब बच्चे मस्जिद नबवी से इलाही अहकाम और रिसालत के हुक्म रसूल (स0) की ज़बान से सुनकर आते थे तो आप उसे बहुत ही ख़ूबसूरत और मुहब्बत के अन्दाज़ में यह कह कर दोहरवाती थीं कि ''बेटा आज तुम्हारे नाना ने नसीहत में क्या बयान फरमायाः''

चुनानचे एक रोज़ जनाब अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) बेटे की समझदारी की ख़बर पाकर ख़ुश हुए और अन्दाज़े बयान देखने के लिये पर्दे के पीछे बैठे। माँ ने आदत के मुताबिक़ जनाब इमाम हसन (अ0) से पूछा– शहज़ादे ने विलायत की ख़ुशबू से असर लेते हुए अर्ज़ किया ''ऐ अम्मा जान आज तो ज़बान लड़खड़ाती है शायद मेरे बाबा देख रहे हैं।''

अब यह खुली हुई बात है कि जो कुछ क़ुर्आन में है। चाहे दीनी हो या दुनियावी, तहज़ीबी हो या कारोबारी सब कुछ रसूल (स0) ने उम्मत तक पहुँचाया और उसकी मुकम्मल तालीम नसीहत व फरमान सब कुछ बच्चों ने माँ तक पहुँचाया और माँ ने दोहराने के तौर पर सुना। बस क्या आज हमारी बहनों को अपने बच्चों में तालीम व तरबियत की तरफ इसका दसवाँ हिस्सा भी ख़याल है! लाख मक्तब जाएँ, मदरसे में किताबें उलटें, घर पर पढ़ाने वाले लगे हों मगर कभी किसी ख़ुशनसीब माँ को इसकी तौफीक़ नहीं होती और न वह इस बात को समझती हैं कि फितरी मुहब्बत व उलफत की वजह से मेरे इस ध्यान का कितना गहरा असर छोटे बच्चों के दिल पर पड़ेगा।

अफसोस! मेरा तो ख़याल है कि माँ का थोड़ा सा ध्यान इस तरह होने से उस्ताद की मेहनत कभी बर्बाद न होगी और लड़के के दिल में माँ के ख़ुश रखने का शौक़ उनकी तालीम को दिन दूनी रात चौगनी कर देगा क्योंकि माँ की गोद लड़के के लिये दुनिया की जन्नत है।

तीसरा फ़र्ज़ घरेलू ज़िम्मादारियों का है कौन नहीं जानता कि शहंशाहे दो जहाँ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ रसूलुस्सक़लैन की इकलौती चहीती बेटी होकर झाड़ू देना, बर्तन धोना, आटा गूँधना, तन्नूर रौशन करना, सीना पिरोना, चक्की चलाना, ऊन कातना, बच्चों की परवरिश, शौहर की ख़िदमत, पड़ोसियों की मदद और उनके ग़म में शरीक होना कौन सा काम ऐसा था जो जनाब फ़ातिमा (स0) अपने हाथों से ख़ुद अन्जाम नहीं देती थीं यहाँ तक कि जो दिन जनाबे फ़िज़्ज़ा के काम करने का नहीं होता था जिन्हें आपकी ख़ादमा होने की इज़्ज़त मिली थी उस दिन उनके सामने तक खाना ले जाना आपकी आदत थी। लेकिन कभी किसी को शिकायत का मौक़ा न मिला। न कहीं से इस बात का पता चलता है कि आपने

काहिली व सुस्ती को रास्ता दिया हो या किसी की शिकायत की हो। बवजूद इन ज़िम्मादारियों के हमेशा सजद–ए–इलाही में रहीं और एक ख़ुदा के डर के साथ चुनानचे जनाब इमाम हसन अलैहिस्सलाम बयान करते हैं कि जब अम्मा जान मेहराबे इबादत में खड़ी होती थीं तो पूरा जिस्म बेद की तरह काँपता नज़र आता था और मुबारक चेहरा ज़र्द हो जाता था और इसे तो आम लोग देखते थे कि हर वक़्त आपके मुबारक हाथों से घर के कामों को पूरा किया जाता था और ज़बान माबूद के ज़िक्र में लगी रहती थी। यही वह अल्लाह की इबादत की बातें थी कि जब कभी तस्बीह पढ़ते–पढ़ते ऊँघ आ जाती तो फरिश्ते अल्लाह के हुक्म से आकर तस्बीह पढ़ते थे और दाने चलते हुए लोगों को नज़र आते थे।

अब बहनें ग़ौर करें कि इन घरदारी के कामों का मुकम्मल तरीक़े से खुद अपने हाथों से अन्जाम देना अपने आप में ऐसा था कि अगर इनके माली फायदों को जिसके ज़रिये से मर्द की आमदनी को यक़ीनी ताक़त पहुँचेगी नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए तो भी कितने फायदे इससे ऐसे हासिल होंगे जो आज सैकड़ों रुपये के ख़र्च के बाद भी हासिल नहीं हो सकते जैसे सुब्ह सवेरे जागने का फायदा क्योंकि आम तौर पर इन कामों को पूरा करने की फिक्र में हमेशा सुबह सवेरे उठना पड़ेगा। बस वह नुक़सानात जो सात–सात आठ–आठ बजे तक पलंग पर करवटें बदलने से सामने आते हैं यानी फेफड़ा ख़राब हो जाता है। ख़ाने के हाज़मे में ख़राबी पैदा होती है। सुस्ती व काहिली महसूस होती है, जो अपने आप जाती रहेंगी और दूसरी बीमारियों का शिकार न होंगे। अच्छी ख़ासी कसरत हो जाएगी। जिस्म मज़बूत व तन्दुरुस्त होगा। खाना पूरी तरह हज़म होगा। पेट और जिगर की कमज़ोरी की शिकायत ख़त्म हो जाएगी। चेहरे पर ख़ून नज़र आने लगेगा। इसके अलावा डाक्टरी और शरई उसूल के हिसाब से रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर हिस्से में जागने की ज़रूरत होगी जिससे अपने आप तन्दुरुस्ती बाक़ी रहेगी और यही तरीक़ा रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर में जागने का फितरत ने भी बताया है। माएँ जानती हैं कि मासूम बच्चे रात के शुरु में सोते हैं और आख़िर हिस्से में जागते हैं।

इसलिए अब हमारी बहनें हमें बताएँ कि जनाबे फ़ातिमा (स0) का इस तरह से अपनी पाक व रौशन ज़िन्दगी में अमली नमूना पेश करना क्या हमें यही सबक़ देता है कि हम उनसे जुड़े होने का दावा करे। बग़ैर वज़ू नाम लेना अदब के ख़िलाफ जानें। उनकी नज़र व नियाज़ ढाँक कर दें, अपनी बेटियों का नाम उनके नाम व ख़िताबात व अलक़ाब के सहारे रखने में दोनों जहानों की कामियाबी समझें। उनकी मुसीबतों और परेशानियों पर गिरया करें। मासूमा (स0) को तकलीफ देने वालों से बेज़ारी करें लेकिन उनकी अमली तालीम को ओछी नज़र से भी न देखें। मिसाल के तौर पर बयान करती हूँ कि हमको अच्छी तरह मालूम है कि आप मुसीबत तन्गी व परेशानियों के मौक़ों पर जो इस पाक व पाकीज़ा घर की इस हिसाब से ख़ुसूसियत थी कि न जाने इस घर की फाक़ाकशी क़ुदरत को कितनी पसन्द थी लेकिन सिवाए सब्र व शुक्र के कभी कोई लफ्ज़ निकलना तो दूर रहा दिल में भी बेचैनी और परेशानी का शक भी पैदा न हुआ। हमेशा खजूर के पत्तों के पेवन्द की चादर सर पर रही मगर अल्लाह के शुक्र में ज़बान हिलती रही। जिसका ज़िक्र आज तक हम फख़्र के साथ

अपनी महफिलों, मज्लिसों, घरों, अज़ीज़ों, दोस्तों में करते हैं लेकिन किसी मोमिना के पेवन्द वाले कपड़ों को देखकर हमारी निगाहों में उसकी इज़्ज़त कम हो जाती है। हम उसका मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं। सामने न सही तो पीठ पीछे जो कुछ जी में आता है कह गुज़रते हैं। यह नहीं सोचते कि अगर पेवन्द लगाकर पहनना या परेशानी और तकलीफ में ज़िन्दगी गुज़ारना हमारे यहाँ शर्म की निशानी और बेइज़्ज़ती व मज़ाक है तो हमारे इस निशानी बनाने से मासूम–ए–कौनैन (स0) का क्या दर्जा रह जाता है।

इसलिए हम को ऐसी बातों से बचना चाहिए और उन मौक़ों पर जिनमें मासूम–ए–कौनैन के तज़करें होते हैं उनकी अमली ज़िन्दगी को बयान करके अपनी बहू, बेटियों को उनके अपनाने का सबक़ पढ़ना चाहिए ताकि अच्छे अख़लाक़, रवादारी, इन्साफ, हक़ बात कहना, हमदर्दी, बर्दाश्त और ईसार पैदा हो और हम मेहनत मज़दूरी और परेशानी से मुहब्बत करके सही मानों में मासूम–ए–कौनैन की पैरवी करने वाली कहलाएँ। मैं सही अर्ज़ करती हूँ कि हमारे लिये यही तरीक़ा बरकत व कामियाबी वाला है और हम इसको अपनाकर दीन व दुनियामें बुलन्द होंगे वरना ऐसे दौर में जब कि मग़रिबी ज़हरीली हवाएँ बहुत ही तेज़ी के साथ क़ौमियत व मज़हबियत को ज़हर से भरती जा रही हैं इस तरह रुख़ करने से हमारी इज़्ज़त, हमारी अज़मत, हमारी पाकदामनी, हमारी इस्मत, हमारा दीन, हमारा मज़हब परेशानी में पड़ जायेगा क्योंकि हमारे बच्चे हमारी इस रोज़ाना नये रंग में बदलने वाली हालत से सबक़ लेकर बहुत जल्द किसी दूसरे रंग में रंग उठेंगे जिसमें दुनिया व आख़िरत दोनों में नुक़सान उठाएँगे। □□□

शेष....इमामे सज्जाद (अ0) की समाजी शख़्सितय

इमाम (अ0) ने अपने इरादे की वज़ाहत करते हुए फरमायाः आयत का इसके बाद का हिस्सा पढ़ो जिसमें मोमिनों की ख़ूबियाँ बयान हैं। ''यह लोग तौबा करने वाले, इबादत अन्जाम देने वाले, ख़ुदा की तारीफ करने वाले, ख़ुदा के रास्ते में सफर करने वाले, रुकू करने वाले, सिजदा करने वाले, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों की हिफाज़त करने वाले हैं, ऐ पैग़म्बर (स0) आप इन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दें'' फिर फरमाया ''अगर इन ख़ूबियों वाले मोमिन हों तो हम जिहाद को किसी चीज़ पर तरजीह नहीं देंगे।

इस जवाब में इमाम सज्जाद (अ0) ने अपनी सियासत, अपना अन्दाज़ और अपने दौर के सुधार की कोशिश के तरीक़े को बिलकुल साफ कर दिया। और उन वजहों को भी बता दिया जिनकी बुनियाद पर इमाम को वह तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ा था। बस इमाम सज्जाद का क़याम न करना और उमवी हुकूमत से जंग न करना इस वजह से न था कि आप दुनियावी आराम चाहते थे। जैसा कि इबाद अलबसरी के सवाल से ज़ाहिर होता है। बल्कि इमाम (अ0)का यह इक़दाम सिर्फ इसलिए था कि आप यक़ीनी तौर पर यह जानते थे कि जंग में जीत का कोई सवाल नहीं, बल्कि इन हालात में वक़्त के हाकिम के ख़िलाफ कोई इक़दाम भी इसके बिलकुल उलट (शर्म और हार) होगा। और इसी वजह से इमाम (अ0) ने इन हालात में उम्मत के सुधार का एक नया तरीक़ा अपनाया जिसके गोशों की तरफ हम आगे इशारा करेंगे। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

मक्का मस्जिद बम धमाके की उलमा ने पुरज़ोर मज़म्मत की

लखनऊ। हैदराबाद की मक्का मस्जिद में ठीक नमाज़ के बीच हुए बम धमाके पर उलमा–ए–किराम ने सख़्त रद्दे अमल का इज़हार करते हुए दहशतगर्दों के ख़िलाफ सख़्त से सख़्त कारवाई करने का मुतालबा किया।

मौलाना कल्बे जवाद साहबः ने मक्का मस्जिद बम धमाके की मज़म्मत करते हुए कहा कि हुकूमत की ला परवाही का नतीजा है उन्होंने कहा कि इससे पहले बहुत सी जगहों पर जो बम धमाके हुए उनमें बिना किसी छानबीन के मुस्लिम तनजीमों को ज़िम्मेदार क़रार दिया गया और मुसलमानों पर गोली चलाई गई मुस्लिम नौजवानों को गिरफ्तार किया गया। मौलाना ने इसे अमरीकी और इस्राईली साज़िश क़रार दिया। उन्होंने कहा कि मुसलमान कैसा भी हो अपनी इबादतगाह में बम नहीं रख सकता। मौलाना ने साफ कहा कि इससे पहले भी कुछ तनज़ीमों ने धमकी दी थी मगर उस पर हुकूमत ने ध्यान नहीं दिया अब वक़्त आ गया है कि मुसलमान अपनी इबादतगाहों की हिफाज़त ख़ुद करे।

मौलाना अब्दुल अलीम फारूक़ीः ने इस हादसे की पुरज़ोर मज़म्म्त करते हुए इसे अमन के ख़िलाफ साज़िश क़रार दिया। उन्होंने कहाकि यह काम इन्सानियत से दुश्मनी रखने वाले ज़हन का है जिसका कोई मज़हब नहीं होता उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इसका सरचश्मा अमरीका है और पूरी दुनिया पर अपनी धौंस क़ायम करना चाहता है उन्होंने मुसलमानों से अमन व चैन क़ायम रखने की अपील के साथ ही हुकूमत से कारवाई का मुतालबा करते हुए शहीदों के लिए दुआ और वारिसों के लिए सब्र की अपील की।

मौलाना ख़ालिद रशीद फिरंगीमहलीः ने धमाके की पुरज़ोर मज़म्मत करते हुए कहा कि यह काम बहुत ही अफसोसनाक है इसकी जितनी भी मज़म्मत की जाए कम है उन्होनें बताया कि मुहक्म–ए–दाख़ला ने हुकूमत को आगाह किया मगर इसके बावजूद हुकूमत ने ठीक तरह से कारवाई नहीं की। मौलाना ने कहा हमारा हुकूमत से मुतालबा है कि असली कुसूरवारों को सज़ा दी जाए बिना जाँच पड़ताल किसी को फंसाया न जाए मौलाना ने मुसलमानों से अपील की कि वह अम्नो अमान क़ायम रखें और दुश्मनों की साज़िश को कामियाब न होने दें।

इसके अलावा मौलाना जहाँगीर आलम क़ासमी, मौलाना हमीदुल हसन, मौलाना फज़्लुर्रहमान वाएज़ी नदवी साहेबान और दूसरे उलमा ने धमाके की मज़म्मत करते हुए मुसलमानों से अपील की कि वह आपस में भाईचारा क़ायम रखें।

इस्राईली फौजियों की रिहाई पर बातचीत आगे बढ़ीः सै0 हसन नस्रुल्लाह

लखनऊ। हिज़्बुल्लाह के रहनुमा हुज्जतुल इस्लाम सै0 हसन नस्रुल्लाह ने लेबनान के भूतपूर्व प्रधानमंत्री रफीक़ हरीरी के क़त्ल के मामले की सुनवाई के लिए संयुक्तराष्ट्र के ज़ेरे इन्तिज़ाम बैनुलअक़वामी अदालत की राय को ठुकरा दिया। हसन नस्रुल्लाहने ईरानी अरबी टेलीवीज़न चैनल अलआलम को दिये इण्टरव्यु के दौरान इस पेशकश को ठुकरा दिया। दूसरी तरफ उन्होंने बताया कि बन्दी बनाए गये इस्राईली फौजियों की रिहाई के बारे में बातचीत आगे बढ़ी है और जल्द ही इस मामले का हल निकाल लिया जाएगा। नस्रुल्लाह ने ईरान के अलआलम टेलीवीज़न चैनल को इण्टरव्यु देते हुए कहा कि हमें बन्दियों के बारे में कोई परेशानी नहीं है हमारे दो बन्दी हैं और हम उनके बारे में बात कर रहे हैं उन्होंने कहा कि यह मसला हल होने वाला है इसमें अब थोड़े ही वक़्त की बात है और उन्होंने और कोई वज़ाहत नहीं की। याद रहे कि दो इस्राईली फौजियों की बन्दी बनाने के ख़िलाफ इस्राईल ने जुलाई 2006 ई0 में लेबनान पर चौंतीस दिनों तक बम्बारी की थी सूत्रों के मुताबिक़ संयुक्तराष्ट्र की मध्यस्ता में हिज़्बुल्लाह के मुजाहिदों की रिहाई के बदले इस्राईली फौजियों को आज़ाद करने के बारे में बात हो रही है।

अरब हुक्मरान ख़लीज को ग़ैरमुल्की फौजों से पाक करें: महमूद अहमदी नेजाद

अबुधाबी। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने संयुक्त अरब इमारात के एतिहासिक दौरे के मौक़े पर अरब हुकमरनों से ख़लीज को ग़ैरमुल्की फौजों से पाक करने की अपील की। 1979 ई0 के इस्लामी इंक़िलाब के बाद किसी ईरानी सरकारी ओहदेदार का संयुक्त अरब इमारात का यह पहला दौरा है। संयुक्त अरब इमारात के राष्ट्रपति शैख़ ख़लीफा बिन ज़ाहिदुन्नहयान और उपराष्ट्रपति व प्रधानमंत्री शैख़ मुहम्मद इब्ने रशीद अलमख़तूम ने हवाई अड्डे पर ईरानी राष्ट्रपति का बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। ध्यान रहे कि ईरानी राष्ट्रपति का यह दौरा अमरीका के उपराष्ट्रपति के दौरे के कुछ दिनों बाद ही हुआ है जिसमें उन्होंने धमकी दी थी कि अमरीका ईरान को न्युकिलियाई हथियार हासिल करने की इजाज़त नहीं देगा। सरकारी ख़बर रसाँ एजेन्सी वाम ने बताया कि शैख़ ख़लीफा और अहमदी नेजाद ने आपसी दिलचस्पी के मामलों में बातचीत की। और उम्मीद ज़ाहिर की कि इस दौरे से दोनों मुल्कों के ताल्लुक़ात और मज़बूत होंगे जिससे दोनों मुल्कों की अवाम को फाएदा पहुँचेगा। इसी बीच महर न्यूज़ एजेन्सी ने ख़बर दी है कि ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि एक दूसरे की मदद से हम ख़लीज को अम्न व दोस्ती के जज़ीरे में बदल सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी ख़्वाहिश है कि ग़ैर मुल्की फौज इस ख़ित्ते को छोड़कर चली जाए ताकि इस ख़ित्ते के मुल्कों को अपने बलबूते पर अपनी हिफाज़त करने का मौक़ा मिल सके। दोनों रहनुमाओं ने मश्रिक़े वुस्ता ख़ासकर इराक़ व फिलस्तीन की सूरते हाल पर भी बातचीत की। शैख़ ख़लीफा ने इराक़ में क़ौमी समझदारी और मश्रिक़े वुस्ता में अम्न बहाल करने पर ज़ोर दिया।

दोनों मुल्कों ने ताल्लुक़ात को और मज़बूत करने के लिये अपने–अपने विदेशमंत्रियों की सरबराही में एक मुशतरका कमेटी बनाने का भी फैसला किया। इस वक़्त संयुक्त अरब इमारात ईरान का सबसे बड़ा तिजारती साथी है। शैख़ ख़लीफा ने कहा कि संयुक्त अरब इमारात चाहता है कि इस ख़ित्ते को जिन वजहों की बुनियाद पर हालात से दोचार होना पड़ रहा है उनसे हमेशा के लिये नजात मिले ताकि ख़ित्ते में मुस्तक़िल और पूरी तरह अम्न क़ायम हो सके।

आह! मौलाना सै0 मुहम्मद साहिब बासटवी ताबा सराह

लखनऊ। अफसोस कि 13 अप्रैल 2007 ई0 को बुज़ुर्ग आलिमे दीन मौलाना सै0 मुहम्मद बासटवी पेश नमाज़ रियासत रामपुर का इन्तेक़ाल हो गया। वतन में मरहूम की तदफीन हुई। मौसूफ कई किताबों के मुसन्निफ थे। 14 अप्रैल को नूरे हिदायत फाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब में क़ाएदे मिल्लत की सदारत में ताज़ियती जलसा हुआ जिसमें मौलाना की हयात और उनके कारनामों पर बयानात हुए और मरहूम की रेहलत पर शदीद रंज व ग़म का इज़हार किया गया। इदारा मरहूम के वरसा को ताज़ियत पेश करता है और मोमिनीन से फातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।

ताजपुर अम्बेडकर नगर में सालाना मजलिसों का इनएक़ाद

ताजपुर। 20 मई 2007 ई0 को मौज़ा ताजपुर में अलइमाम चेयरटेबल फाउण्डेशन की जानिब से दो तबलीग़ी मज्लिसों का इनएक़ाद किया गया। पहली मज्लिस को क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब क़िब्ला ने और दूसरी मज्लिस को मुफक्किरे आली क़दर मौलाना सै0 अबुलक़ासिम साहिब ने ख़िताब फरमाया। प्रोग्राम के संचालक और फाउण्डेशन के चेयरमैन ने शरीक होने वालों का आख़िर में शुक्रिया अदा किया। यक़ीनन यह सालाना प्रोग्राम जो पिछले तक़रीबन 70 सालों से जारी है तारीख़ी हैसियत वाला है जिसमें बराबर उमदतुल उलमा ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ मौलाना सै0 कल्बे हुसैन साहिब, सैयिदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी साहिब और सफवतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहिब रहमतमाब ज़ाकिरी फरमाते रहे।